अनुवाद

हे परंतप! द्रव्ययज्ञ से ज्ञानयज्ञ उत्तम है, क्योंकि हे पार्थ! सब कर्मों का पर्यवसान दिव्यज्ञान ही है।।३३।।

तात्पर्य

सब यज्ञों का बस यही प्रयोजन है कि जीव को पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति हो, जिससे वह भवरोग के दुःखों से मुक्त होकर अन्त में भक्तियोग के परायण हो जाय। तब भी ये विविध यज्ञ क्रियायें रहस्यमयी हैं। यह रहस्य मनुष्यमात्र के लिए जानने योग्य है। कर्ता की श्रद्धा के अनुपात में यज्ञों के विविध रूप हैं। जब यजनकर्ता की श्रद्धा ज्ञान के स्तर पर पहुँच जाय, तो उसे ज्ञानरहित द्रव्ययज्ञ करने वाले से श्रेष्ठ माना जाता है, क्योंकि ज्ञानशून्य यज्ञ प्राकृत स्तर पर हैं; वे कल्याण-प्राप्ति में सहायक सिद्ध नहीं हो सकते। यथार्थ ज्ञान का पर्यवसान कृष्णभावना है, जो ब्रह्मविद्या की पराकाष्ठा है। ज्ञान के बिना यज्ञ लौकिक क्रियामात्र रह जाता है। परन्तु ज्ञान के साथ ऐसी सब क्रियाएँ दिव्यता प्राप्त कर लेती हैं। मतिभेद के आधार पर यज्ञक्रियाओं को कर्मकाण्ड (सकामकर्म) अथवा ज्ञानकाण्ड (सत्यजिज्ञास) कहा जाता है। अस्तु, वही यज्ञ श्रेष्ठ है, जिससे अन्त में ज्ञान की प्राप्ति हो जाय।

7/4

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः।।३४।।

तत्=उस ज्ञान को; **विद्धि**=जान; **प्रणिपातेन**=सद्गुरु की शरण में जाकर; **परिप्रश्नेन**=विनीत आज्ञानुवर्ती जिज्ञासा से; **सेवया**=सेवा द्वारा; **उपदेक्ष्यन्ति**=दीक्षित करेंगे; **ते**=तुझ को; **ज्ञानम्**=ज्ञान में; **ज्ञानिनः**=आत्मज्ञानी; **तत्त्वदर्शिनः**=तत्त्वदर्शी।

अनुवाद

सद्गुरु के शरणागत होकर दण्डवत् प्रणाम, विनम्र जिज्ञासा और निष्कपट भाव से उनकी सेवा करके उस तत्त्व को जान। वे तत्त्व को जानने वाले आत्मज्ञानी महापुरुष तेरे लिए ज्ञान का उपदेश करेंगे।।३४।।

तात्पर्य

भगवत्प्राप्ति का मार्ग निःसन्देह कठिन है। अतएव श्रीभगवान् का परामर्श है कि उनसे प्रारम्भ हुई शिष्यपरम्परा के प्रामाणिक आचार्य की शरण ग्रहण करे। शिष्यपरम्परा के इस सिद्धान्त का उल्लंघन करने वाला यथार्थ गुरु नहीं हो सकता। श्रीभगवान् सबके आदिगुरु हैं, इसलिए उनकी परम्परा के आचार्य अपने शिष्य को यथार्थ भगवत्-तत्त्व का ज्ञान करा सकते हैं। मूर्ख पाखण्डियों की परिपाटी के अनुसार स्वनिर्मित पद्धति का अनुसरण करके कोई भगवत्प्राप्ति नहीं कर सकता। श्रीमद्भागवत की प्रामाणिक उक्ति है— **धर्मं हि साक्षात्भगवत्प्रणीतम्** 'धर्मपथ का निर्णय स्वयं श्रीभगवान् ने किया है। अतएव मनोधर्म अथवा शुष्क तर्क भगवत्प्राप्ति के पथ में सहायक सिद्ध नहीं हो सकता। ज्ञान के लिए यथार्थ सद्गुरु की शरण का आश्रय ग्रहण करना आवश्यक है। गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण कर दे, और मिथ्या अहंकार को